तैयारी

टीचर'ज़ गाइड (शिक्षक का मार्गदर्शक) में बड़ी मेहनत से पाठों को अच्छी तरह प्रस्तुत करना सम्भव बनाया गया है। पाठ को प्रस्तुत करने के लिए अपने आपको पूरी तरह से तैयार करके ही अच्छी तरह से सिखाया जा सकता है।

सिखाने वाले को *टीचर'ज़ गाइड* (शिक्षक का मार्गदर्शक) नामक इस भाग में इस पाठ को प्रस्तुत करने के लिए तैयारी करने में सहायता के लिए निम्न सुझाव दिए गए हैं:

1. तैयारी से पहले प्रार्थना करें कि आप अच्छी तरह से तैयारी कर पाएं, आपका व्यवहार उचित हो, आप वही बातें करें जिनसे आप पाठ सिखाने के लिए तैयार हो सकें, अध्ययन को खुले मन से समझ सकें व स्पष्ट रूप से देख सकें कि उस विषय पर बाइबल क्या सिखाती है, जितना सम्भव हो सके उस पाठ को व्यापक रूप से समझ सकें, ताकि सीखने वाले को अच्छी तरह से समझा सकें और मसीह के एक अच्छे प्रतिनिधि बन जाएं।

2. पाठों सम्बन्धी सभी निर्देशों को ध्यान से पढ़ें और फिर सब आयतों को देखने के लिए समय निकालकर उस पाठ को भी पढ़ें। केवल सभी आयतों को देख लेना ही काफी नहीं है बल्कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि पूरा संदर्भ समझ में आ जाए, आगे-पीछे की आयतों को भी ज़रूर पढ़ें। सिखाने वाला कुछ आयतों में आने वाली समस्याओं को सुलझाने के लिए तैयार हो जाएगा। वह पाठ के बहाव तथा उद्देश्य की ओर विशेष ध्यान देगा।

3. यह स्पष्ट कर लें कि प्रस्तुत किए जाने वाले पाठ का मूल उद्देश्य क्या है और फिर पाठ के भाग तथा प्रत्येक वाक्य के उद्देश्य को भी तय कर लें। पाठ का उद्देश्य लिखकर उसके प्रत्येक भाग के उद्देश्य को भी लिख लें।

4. सीखने वाले व्यक्ति के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर पाठ पर विचार करें। उसकी आवश्यकताओं, उसके व्यवहारों, उसकी पृष्ठभूमि, और बाइबल में उसकी समझ, और उसे यीशु का एक समर्पित अनुयायी बनाने में उसकी सहायता पर विचार करें।

5. उन उदाहरणों पर भी विचार करें जिनसे सुनने वाले के मन पर आपकी बात को स्पष्ट करने या सच्चाई से प्रभावित करने में सहायता मिल सकती है। अच्छे उदाहरणों से सीखने वाले को न केवल समझने में सहायता मिलेगी बल्कि उसके लिए पाठ और भी दिलचस्प बन जाएगा।

6. उन प्रश्नों पर विचार करें जिनसे सुनने वाले को पता चल सके कि कोई आयत पढ़ते समय किस बात को ध्यान में रखना चाहिए। अच्छे प्रश्नों से सीखने वाले व्यक्ति को पाठ से सम्बन्धित आयत की जानकारी पर ध्यान लगाए रहने और यह देखने में सहायता मिलेगी कि कहीं कुछ छूट तो नहीं गया है।

7. पाठ का परिचय देने, पाठ को प्रस्तुत करने और फिर पाठ को संक्षिप्त करके उसका निष्कर्ष निकालने के लिए तैयारी करें। परिचय से सीखने वाले को पाठ के बारे में पता लग जाना चाहिए, पाठ की विषय-वस्तु में अध्ययन शीट के प्रत्येक भाग की सामग्री पर विचार किया जाना चाहिए, और संक्षेप तथा निष्कर्ष में प्रस्तुत किए जाने वाले पाठ पर संक्षेप में फिर से विचार कर लेना चाहिए।

इस तरह एक शिक्षक अपने आपको तैयार करके, शिक्षा के वास्तविक अनुभव से पाठ से परिचित होने के लिए पाठ को किसी मित्र के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है। इससे उस शिक्षक को किसी अपरिचित वातावरण के दबाव से मुक्त होकर मित्रतापूर्वक वातावरण में प्रस्तुति की अपनी योग्यता को विकसित करने में सहायता मिलेगी। पाठ को प्रस्तुत करते समय, सिखाने वाले के मन में उस व्यक्ति का चित्र होना चाहिए जिसे बाद में वह पाठ सिखाया जाना है।

पाठ की प्रत्येक प्रस्तुति के बाद, सीखने वाले को अभ्यास या निर्देश देने के लिए, शिक्षक को पाठ की अपनी प्रस्तुति का अवलोकन कर लेना चाहिए। अवलोकन के लिए नीचे दिए सुझावों का इस्तेमाल किया जा सकता है:

1. क्या मैंने पाठ का परिचय सही ढंग से दिया?
2. क्या मैंने पाठ के प्रत्येक भाग को सही ढंग से प्रस्तुत करके प्रत्येक भाग के उद्देश्य को पूरा किया?
3. क्या मैं पाठ के परिचय से सहज ढंग से विषय वस्तु में अर्थात एक से दूसरे भाग में, और फिर विषय वस्तु से पाठ के निष्कर्ष तक चला गया?
4. क्या सीखने वाले को मेरे प्रश्न आसानी से समझ आने वाले थे, और क्या उनसे सीखने वाले को उन आयतों से जो हमने पढ़ीं, सीखने में सहायता मिली?
5. क्या मैंने उदाहरणों का सही इस्तेमाल किया? क्या उनसे पाठ विस्तृत हो गया?
6. क्या मैंने प्रत्येक खण्ड और पाठ के लिए अपना उद्देश्य पूरा किया?
7. क्या सीखने वाले को वह बात समझ आ गई जो मैं पाठ में उसे सिखाना चाहता था?
8. क्या मैंने पाठ को उचित ढंग से संक्षिप्त करके निष्कर्ष निकाला?

यदि सिखाने वाले को लगता है कि उसने ऊपर दिए सुझावों में से कुछ में अच्छा नहीं किया है, तो उसे अगली प्रस्तुति में सुधार करने का प्रयास करने में ज्यादा समय लगाना चाहिए। हो सकता है कि पहली प्रस्तुति इतनी सहज न हो, परन्तु प्रत्येक प्रस्तुति में सुधार की इच्छा और धैर्य से लगे रहकर अभ्यास से आसानी से समझ आ सकने वाला पाठ तैयार किया जा सकता है।